कितनी दूर फेलिपे?

लेखनः जेनेवीव ग्रे

चित्र: एन ग्रिफैल्कोनी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

फेलिपे मैक्सिको में रहता था। उसकी छोटी-सी बुर्रो (गधी) फिलोमीना उसकी दोस्त थी। पर जब फेलिपे के परिवार ने कर्नल आंज़ा के कैलिफोर्निया अभियान से जुड़ने का फ़ैसला किया, फेलिपे के चाचा कार्लोस ने कहा कि उन्हें फिलोमीना को छोड़ जाना होगा। पर फेलिपे ने उसे कारवाँ के दूसरे मवेशियों के बीच छिपा लिया।

सफ़र बेहद लम्बा और मुश्किल था। मुसाफ़िरों ने भारी परेशानियाँ झेलीं। रास्ते में कई मवेशी मारे गए। पर फेलिपे और उसका परिवार बच गया। फिलोमीना भी बच गई।

इतिहास की यह 'आई कैन रीड' क़िताब कर्नल हुआन बाउतीस्ता दे आंज़ा के 1775 के कैलिफोर्निया अभियान को फिर से रचती है। जैनेवीव ग्रे के संवेदनशील शब्दों में कही गई इस कथा को एन ग्रिफेल्कोनी के चित्र जीवन्त बना देते हैं।

कितनी दूर फेलिपे?

लेखनः जेनेवीव ग्रे

चित्र: एन ग्रिफैल्कोनी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

ब्रैड इरविन के लिए

अनुक्रम

1. फेलिपे

फेलिपे अपने चाचा कार्लोस

चाची मारिया

और अपने छह चचेरे भाई-बहनों के साथ रहता था।

फिलोमीना उसकी दोस्त थी।

वह छोटी-सी गधी थी।

फिलोमीना बड़ा ही शोर करती थी,
पर थी छोटी-सी।
इतनी छोटी कि वह
खेत में मदद तक नहीं कर पाती थी।

चाचा कार्लोस ने खेत में मक्की उगाने की कोशिश की।
पर ज़मीन उपजाऊ ही नहीं थी।
फेलिपे अक्सर भूखा रहता था,
उसके चचेरे भाई-बहन भी।
और मैक्सिको के उनके कस्बे के
तमाम दूसरे लोग भी।
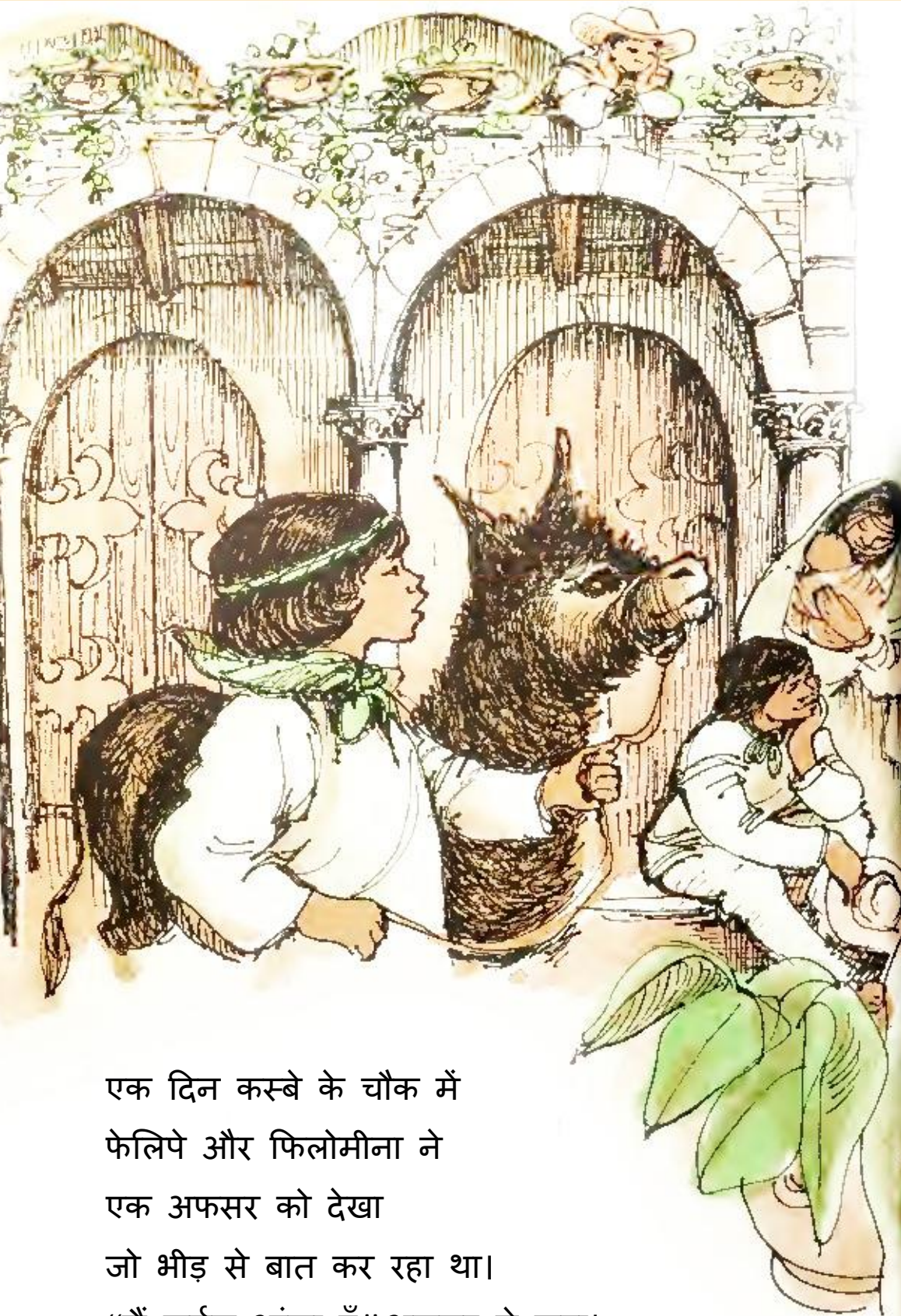
एक दिन कस्बे के चौक में
फेलिपे और फिलोमीना ने
एक अफसर को देखा
जो भीड़ से बात कर रहा था।
''मैं कर्नल आंज़ा हूँ,'' अफसर ने कहा।

''मैक्सिको के वायसराय (सूबेदार) को
तीस परिवारों की ज़रूरत है,
जो कैलिफोर्निया में जा बसने को तैयार हों।
वहाँ ज़मीन उपजाऊ है,
खेतीबारी और पशुपालन के लिए बढ़िया है।

हर परिवार को
कपड़ा, भोजन, घोड़े,
और पालतू जानवर मिलेंगे,
मुफ्त!
अगर घोड़ों से सफ़र करें
तो कैलिफोर्निया चार महीने की दूरी पर है।
मेरे सिपाही और मैं
आप लोगों को वहाँ तक ले जाएंगे।
कौन-कौन जाना चाहेगा?''
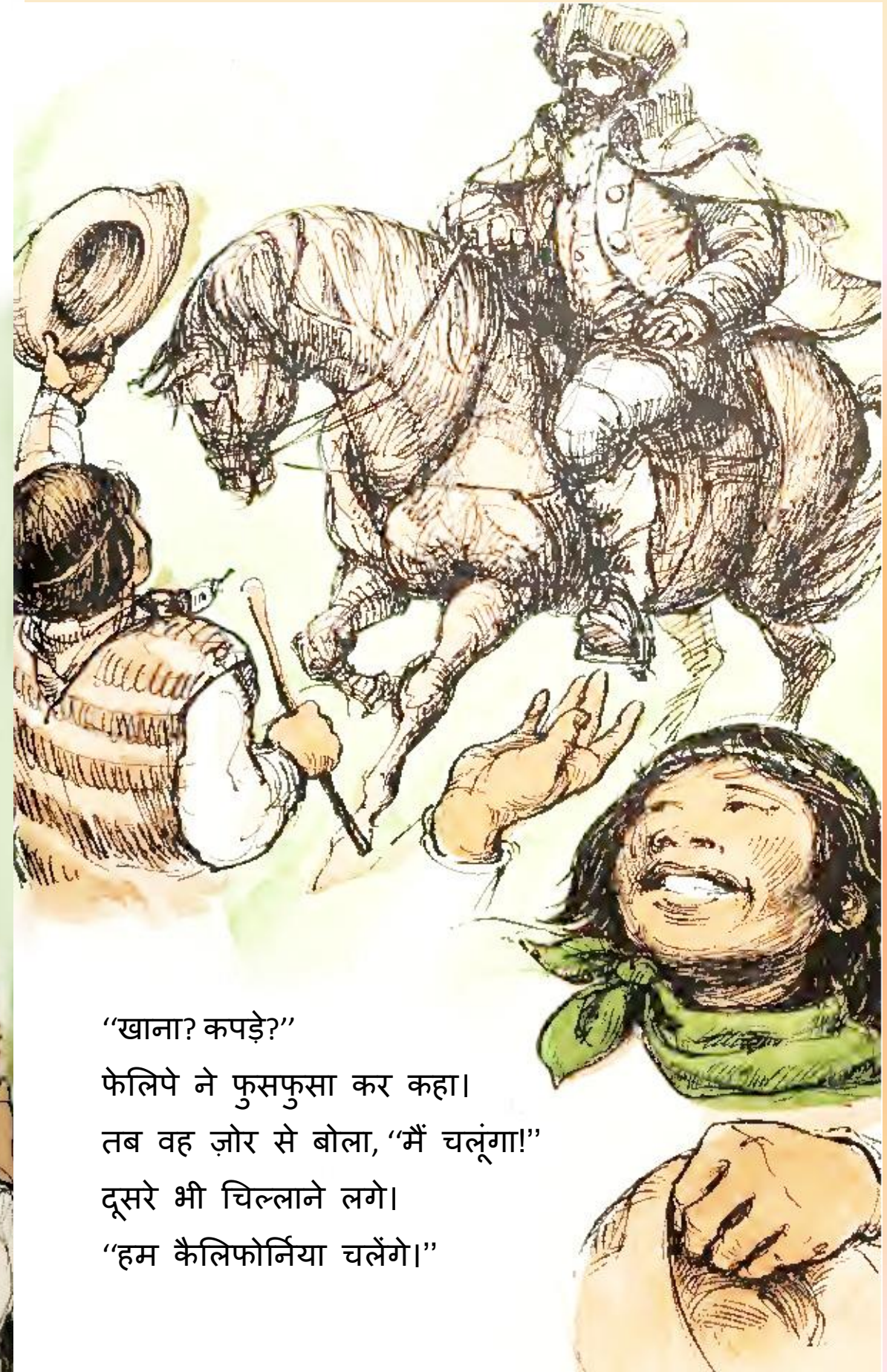
''खाना? कपड़े?''
फेलिपे ने फुसफुसा कर कहा।
तब वह ज़ोर से बोला, ''मैं चलूंगा!''
दूसरे भी चिल्लाने लगे।
''हम कैलिफोर्निया चलेंगे।''
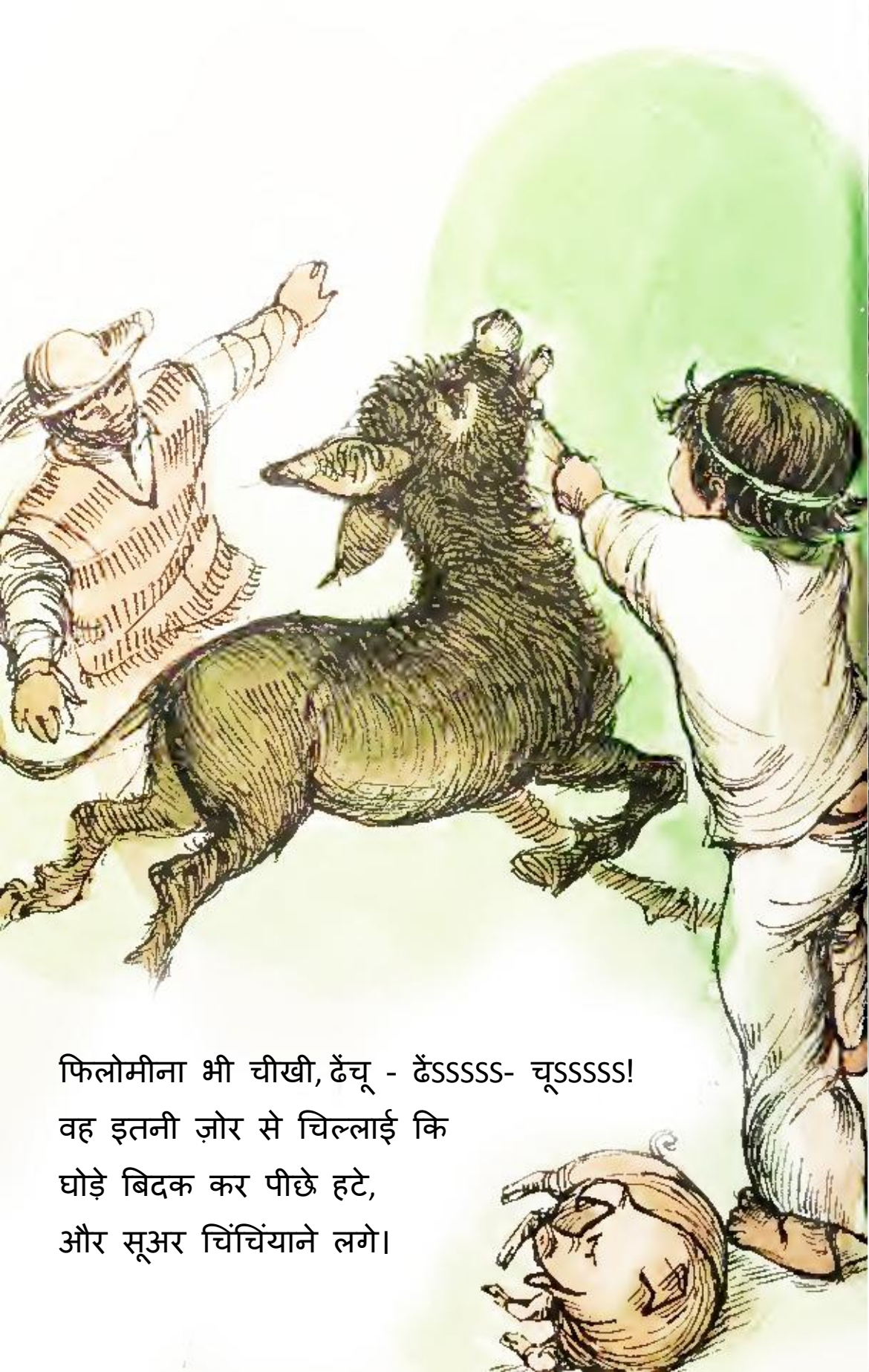
फिलोमीना भी चीखी, ढेंचू - ढेंSSSSS- चूSSSSS!
वह इतनी ज़ोर से चिल्लाई कि
घोड़े बिदक कर पीछे हटे,
और सूअर चिंचियाने लगे।
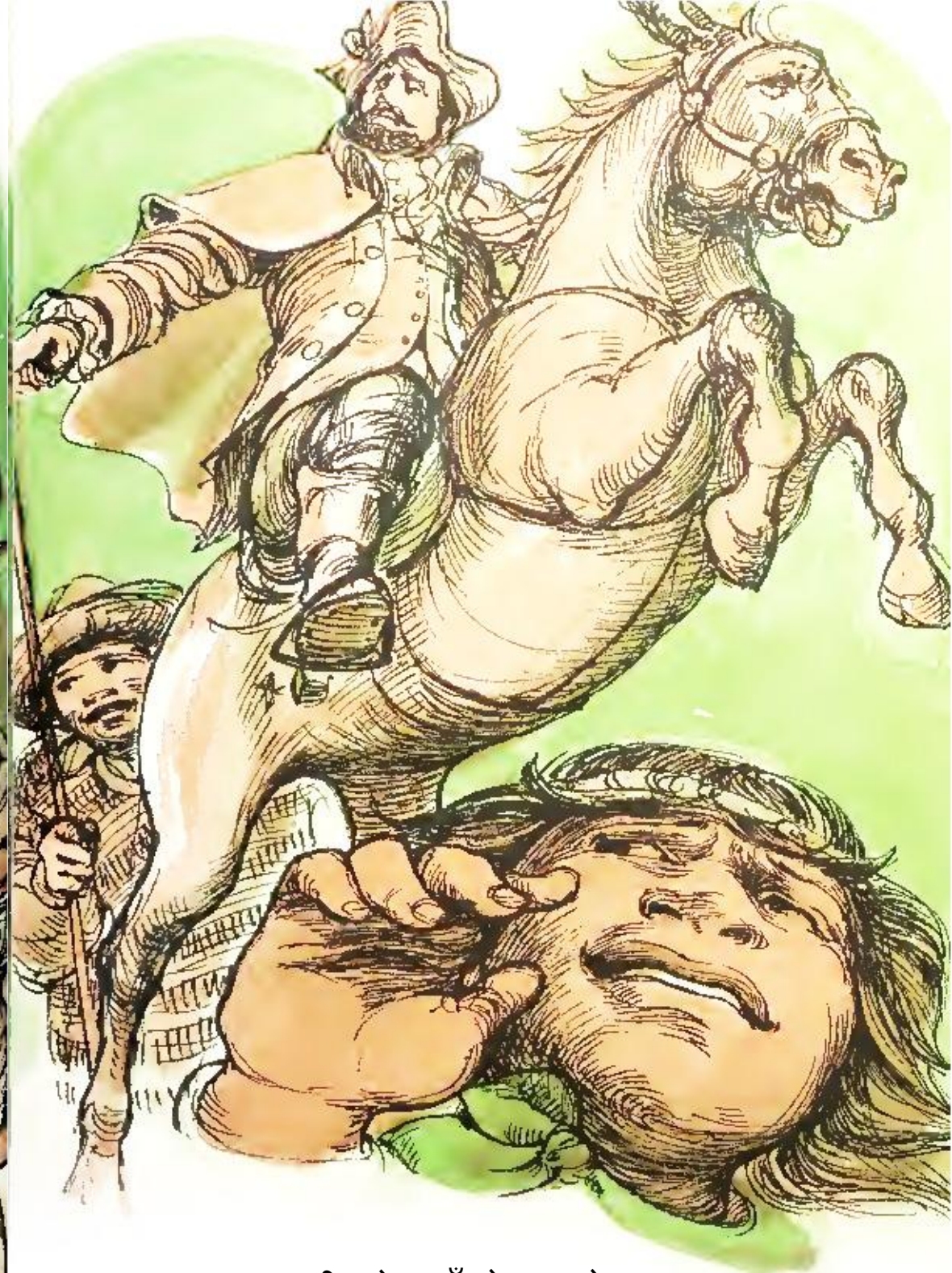
''इस गधी को यहाँ से हटाओ!''
कर्नल आंज़ा गरजे।

फेलिपे चाचा कार्लोस को ख़बर देने घर दौड़ा।
पर चाचा कार्लोस ने कहा,
''कैलिफोर्निया बहुत दूर है।''
''तो इसकी परवाह किसे है?'' चाची मारिया ने का।
''हम यहाँ मेंढ़कों से रहते हैं।
हमें ज़िन्दा रहने के लिए भोजन और कपड़ों की ज़रूरत है।''

सो, वे नाम लिखवाने गए।
''मैं फिलोमीना को अपने साथ
कैलिफोर्निया ले जाऊंगा,'' फेलिपे ने कहा।
''बिलकुल नहीं!'' चाचा कार्लोस बोले,
''वह काम करने के लिए बहुत छोटी है।''

''वह बड़ी कब होगी?'' फेलिपे ने पूछा।
''जब उसके कंधे तुम्हारे जितने
ऊंचे हो जाएंगे,''
चचा कार्लोस ने कहा।
''पर तब तक
तुम कैलिफोर्निया में होगे।''

ढेंचू - ढेंऽऽऽऽऽ- चूऽऽऽऽऽ!
फिलोमीना गा उठी।
उसकी बात सिर्फ़ फेलिपे समझा।
फिलोमीना भी उसके साथ
कैलिफोर्निया चलने वाली थी।

2. प्रस्थान

''हमें रेगिस्तानों और
पहाड़ों को पार करना होगा,''
कर्नल आंज़ा ने बताया।
''हमें रास्ते में दोस्ताना इन्डियन
(अमरीका के मूल निवासी) मिलेंगे,
और ऐसे भी जो कतई दोस्ताना नहीं हैं।
सफ़र मुश्किल होगा।''

आख़िरकार सफ़र की तैयारी पूरी हुई।
कर्नल आंज़ा ने कारवाँ की अगुवाई की।
उनके पीछे सिपाही चले,
तब थे परिवार।
उनके पीछे और सिपाही चले।
उनके भी पीछे थे रसद ढ़ोने वाले खच्चर।
और सबसे आख़िर में थी फिलोमीना।

फेलिपे घोड़े पर सवार था।
उसके चचेरे भाई-बहन
होसे और रूबेन भी।
फेलिपे ने फिलोमीना को तलाशा।
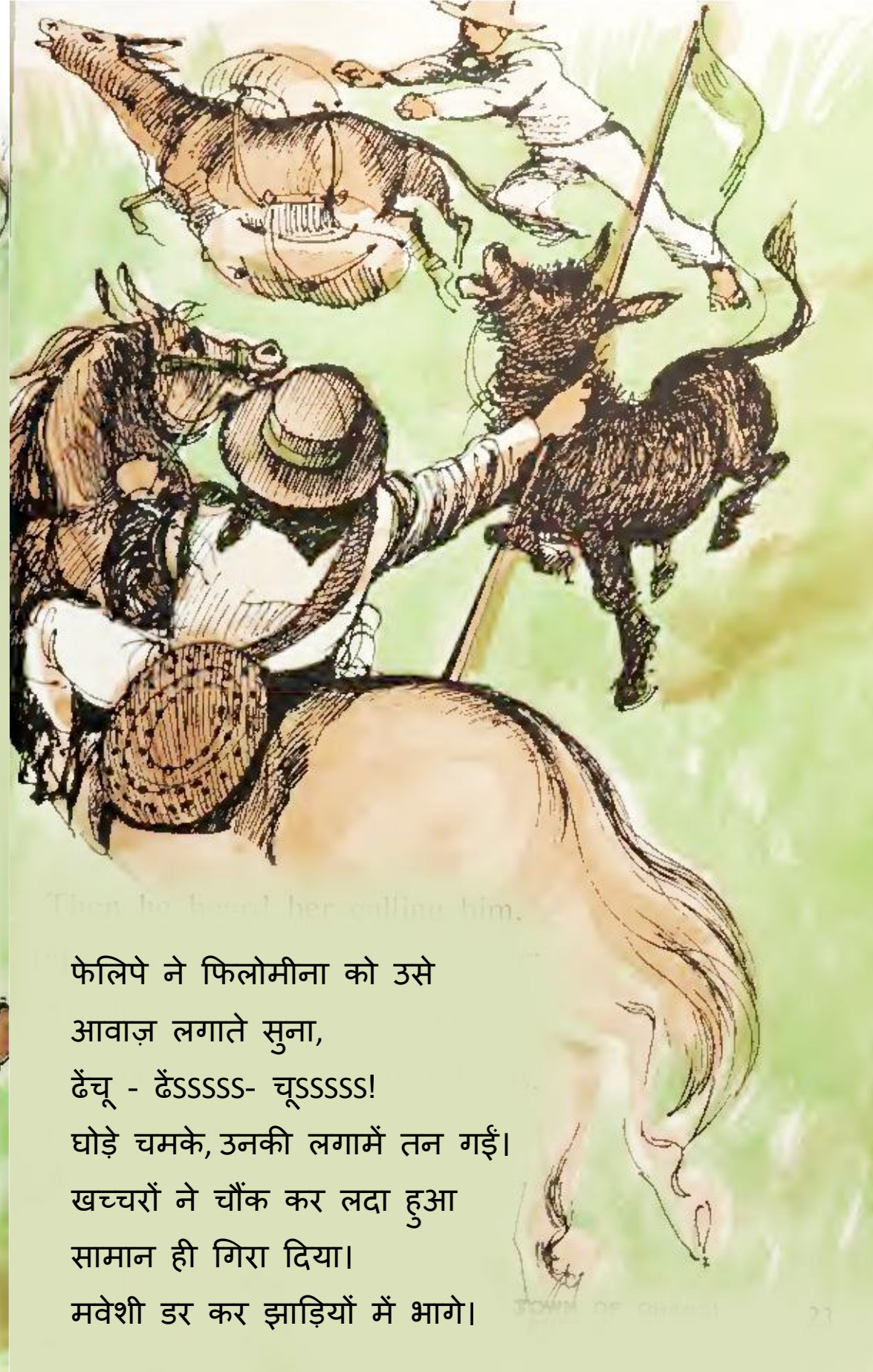
फेलिपे ने फिलोमीना को उसे
आवाज़ लगाते सुना,
ढेंचू - ढेंऽऽऽऽऽ- चूऽऽऽऽऽ!
घोड़े चमके, उनकी लगामें तन गईं।
खच्चरों ने चौंक कर लदा हुआ
सामान ही गिरा दिया।
मवेशी डर कर झाड़ियों में भागे।

कारवाँ रुक गया।

''उस बुर्रो को दफ़ा करो!''

कर्नल आंज़ा ने गुस्से से हुकुम दिया।

पर इतनी भगदड़ मची थी कि किसी

ने हुकुम सुना ही नहीं।

सारे सिपाही मवेशियों को

इकट्ठा करने में लगे थे।
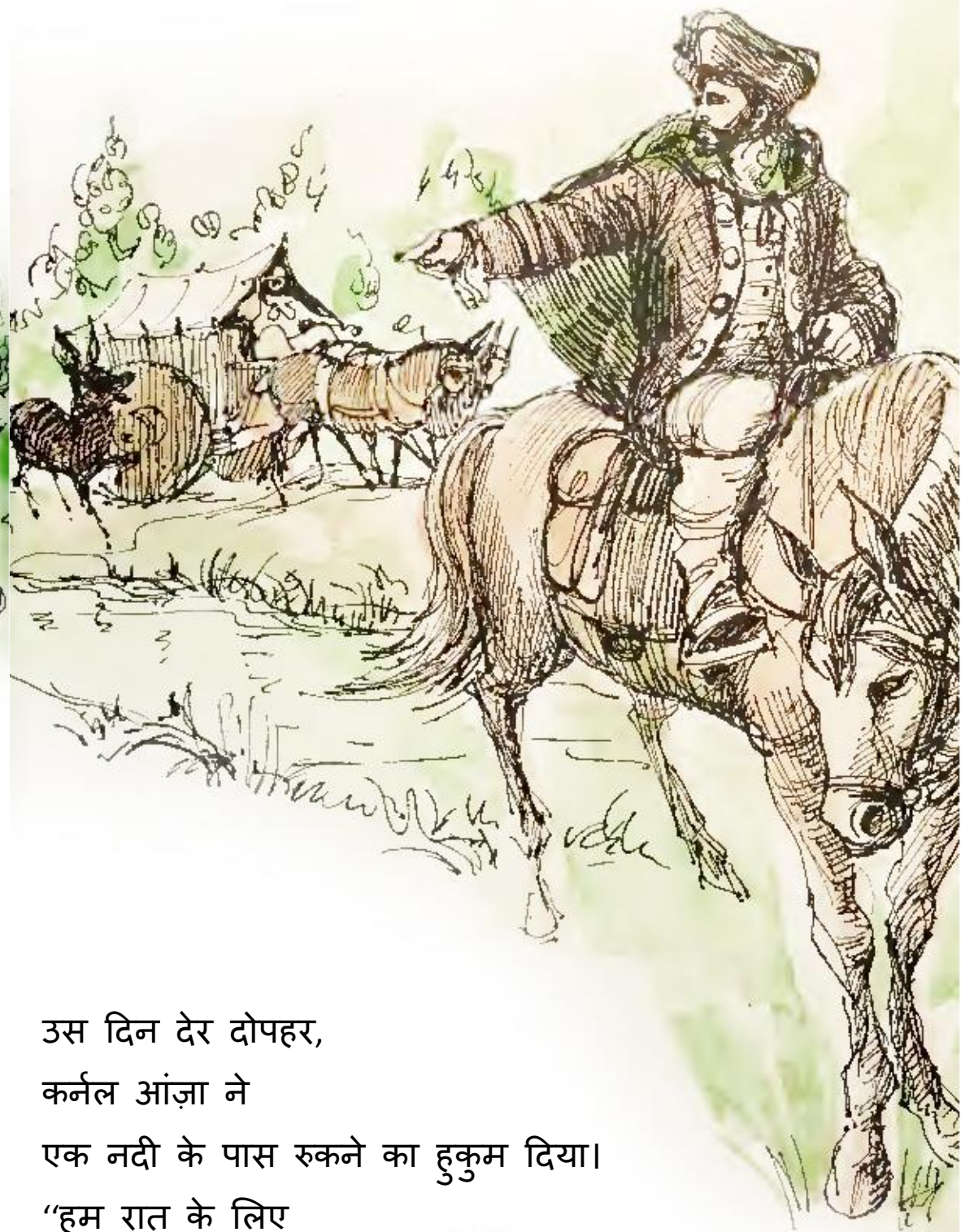
उस दिन देर दोपहर,

कर्नल आंज़ा ने

एक नदी के पास रुकने का हुकुम दिया।

''हम रात के लिए

यहीं डेरा डालेंगे,'' वे बोले।
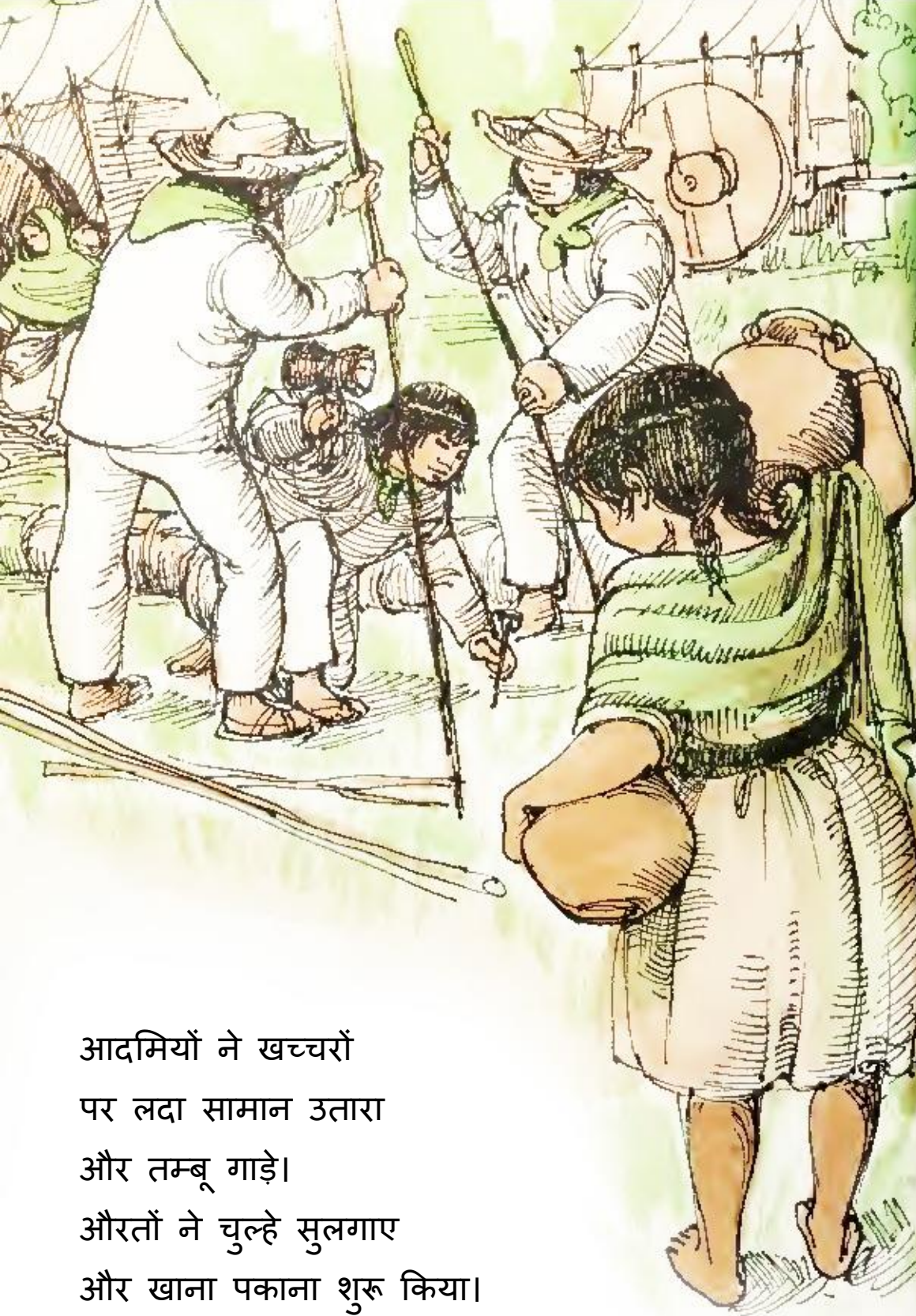
आदमियों ने खच्चरों
पर लदा सामान उतारा
और तम्बू गाड़े।
औरतों ने चुल्हे सुलगाए
और खाना पकाना शुरू किया।
बच्चे जंगलों में खेले।

फेलिपे ने फिलोमीना को
खच्चरों के साथ घास चरते पाया।
''मैं तुम्हें, प्यार करता हूँ, फिलोमीना,''
फेलिपे ने फुसफुसा कर उसके कान में कहा।
फिलोमीना ने अपना सिर
फेलिपे की छाती पर टिका दिया।
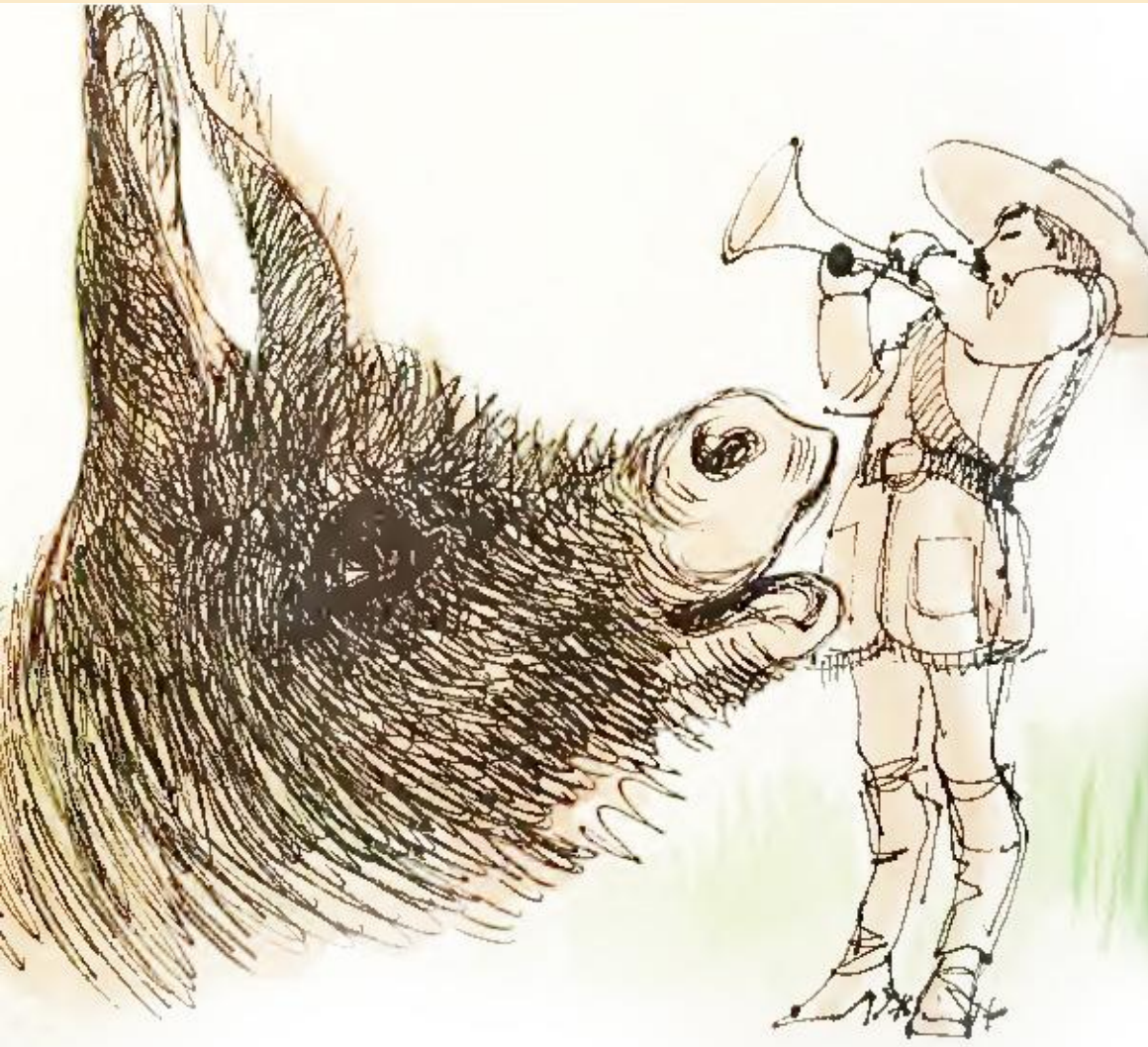
अगली सुबह
एक सिपाही ने बिगुल बजाया।
फिलोमीना साथ में गा उठी
"ढेंचू - ढेंSSSSS- चूSSSSS!"
सभी लोग हड़बड़ा कर जाग गए।
''यह बुर्रो उतनी बुरी भी नहीं है,''
कर्नल आंज़ा बोले।

इसके बाद से, फिलोमीना हर सुबह गाती,
''जागने-का-वक़्त-हो-गया-है।''
चचा कार्लोस भी
उससे खुश लगते।

कुछ दिनों बाद
वे एक पहाड़ी दर्रे तक पहुँचे।
चारों ओर ऊँची-ऊँची चट्टानें थीं।
कर्नल आंज़ा को डर था कि
कहीं इन्डियन हमला न कर दें।

"अपाचे (मूल निवासियों का एक क़बीला)
जासूस उन चट्टानों पर
चढ़ कर देखेंगे," उन्होंने कहा।
इस चेतावनी के बाद वे घाटी में आगे बढ़े।
उस रात कोई नहीं सो सका।
पूरी रात फेलिपे ने कान लगा
अपाचियों की आहट सुनने की कोशिश की।
उसे लगता रहा कि कुछ जासूस हैं,
पर ये तो सिर्फ़ छायाएं थीं।

भोर होते ही कारवाँ फिर से चल पड़ा।
किसीने नाश्ता नहीं किया।
''दोपहर तक हम महफ़ूज़ हो जाएंगे,''
कर्नल आंज़ा ने कहा।
''हम तब ही खाएंगे।''
''कैलिफोर्निया को तो एक अच्छी
जगह होना होगा!''
चाची मारिया ने शिकायत की।
''अगर हम वहाँ कभी पहुँचे तो,''
चचा कार्लोस ने शंका से भर कहा।
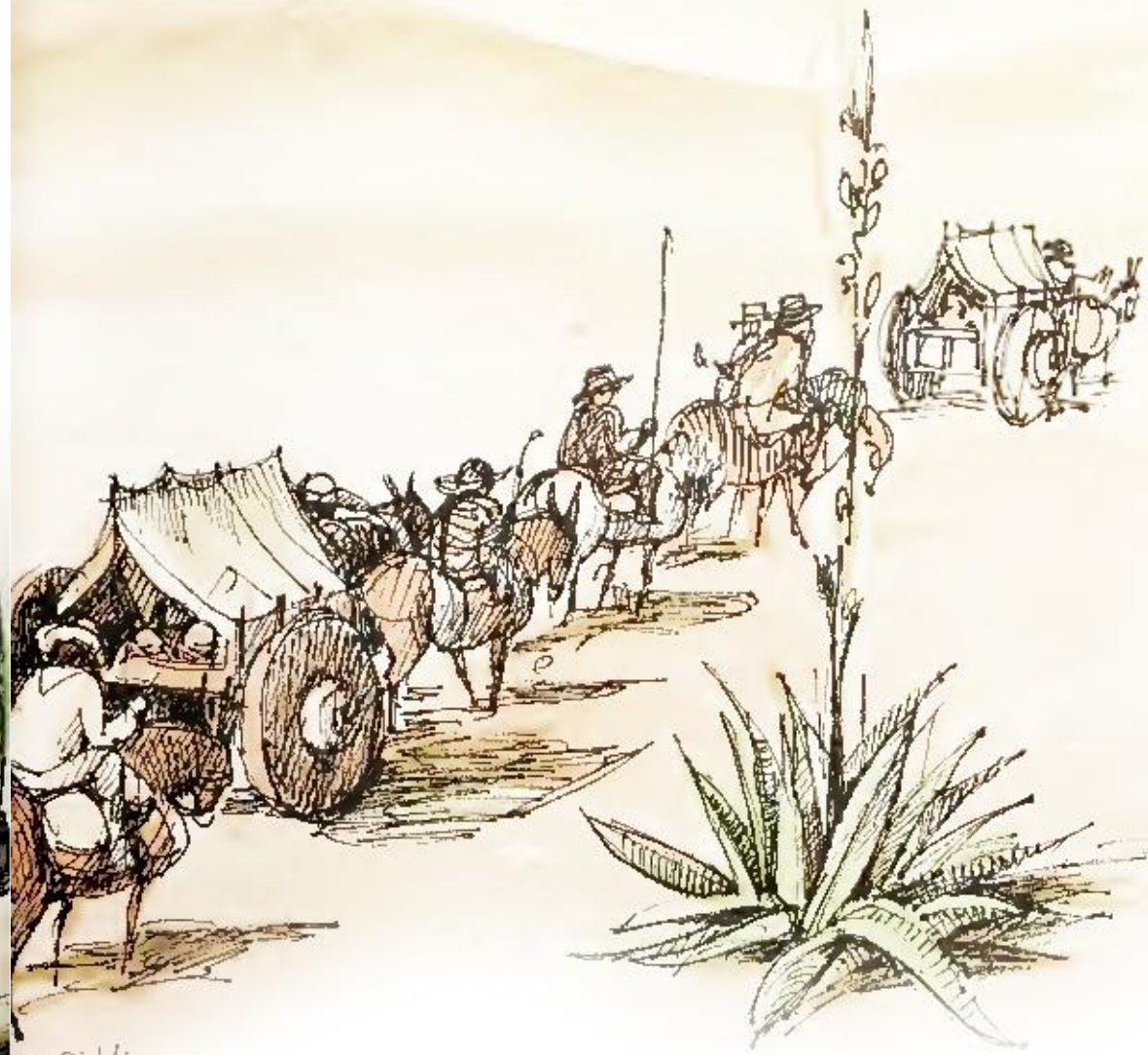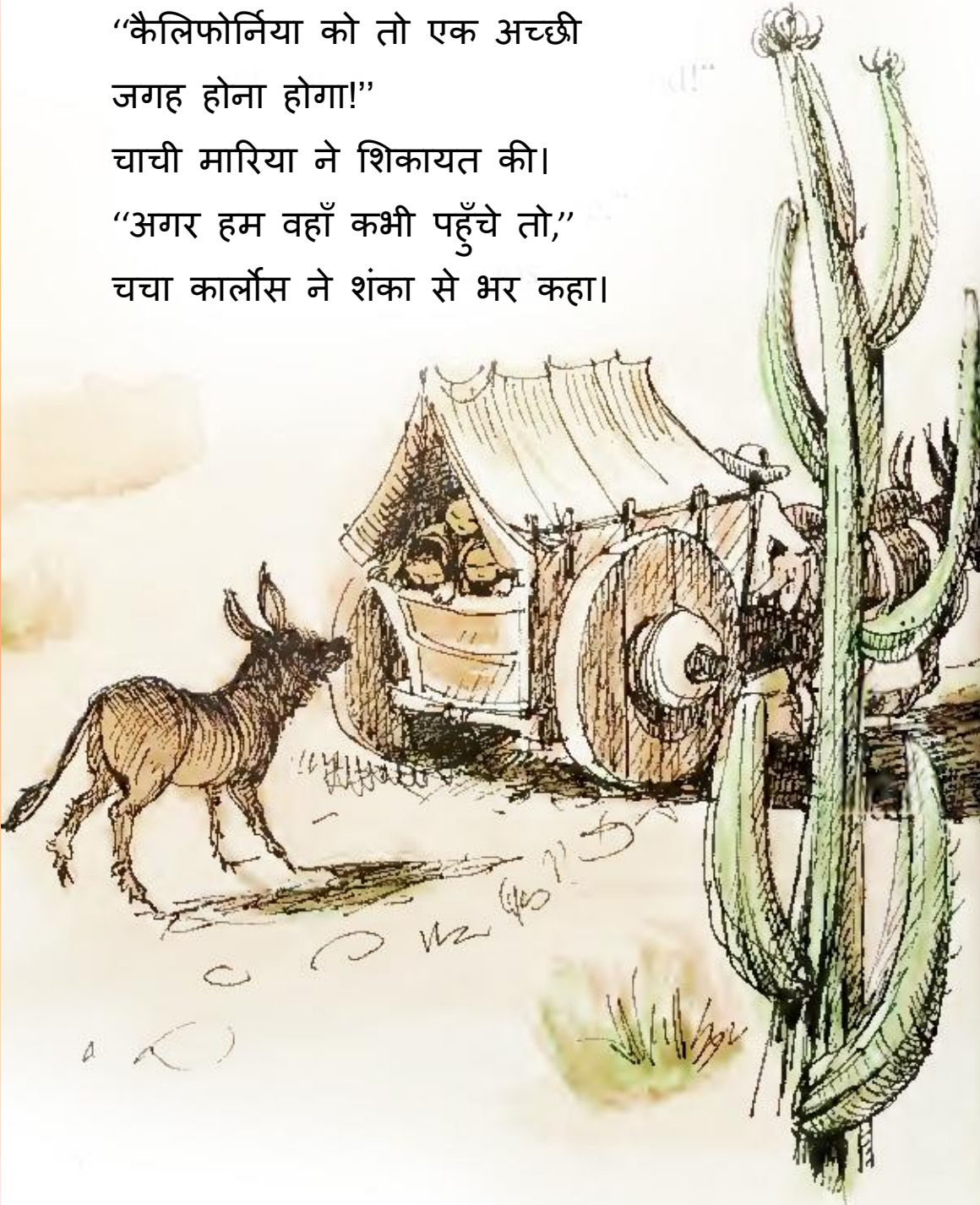
3. इन्डियनों का इलाका

अब वे एक रेगिस्तान तक पहुँचे।
वे अगले कई सप्ताह आगे बढ़ते रहे,
रेगिस्तान के मीलों-मील
तब और भी मील पार करते गए।
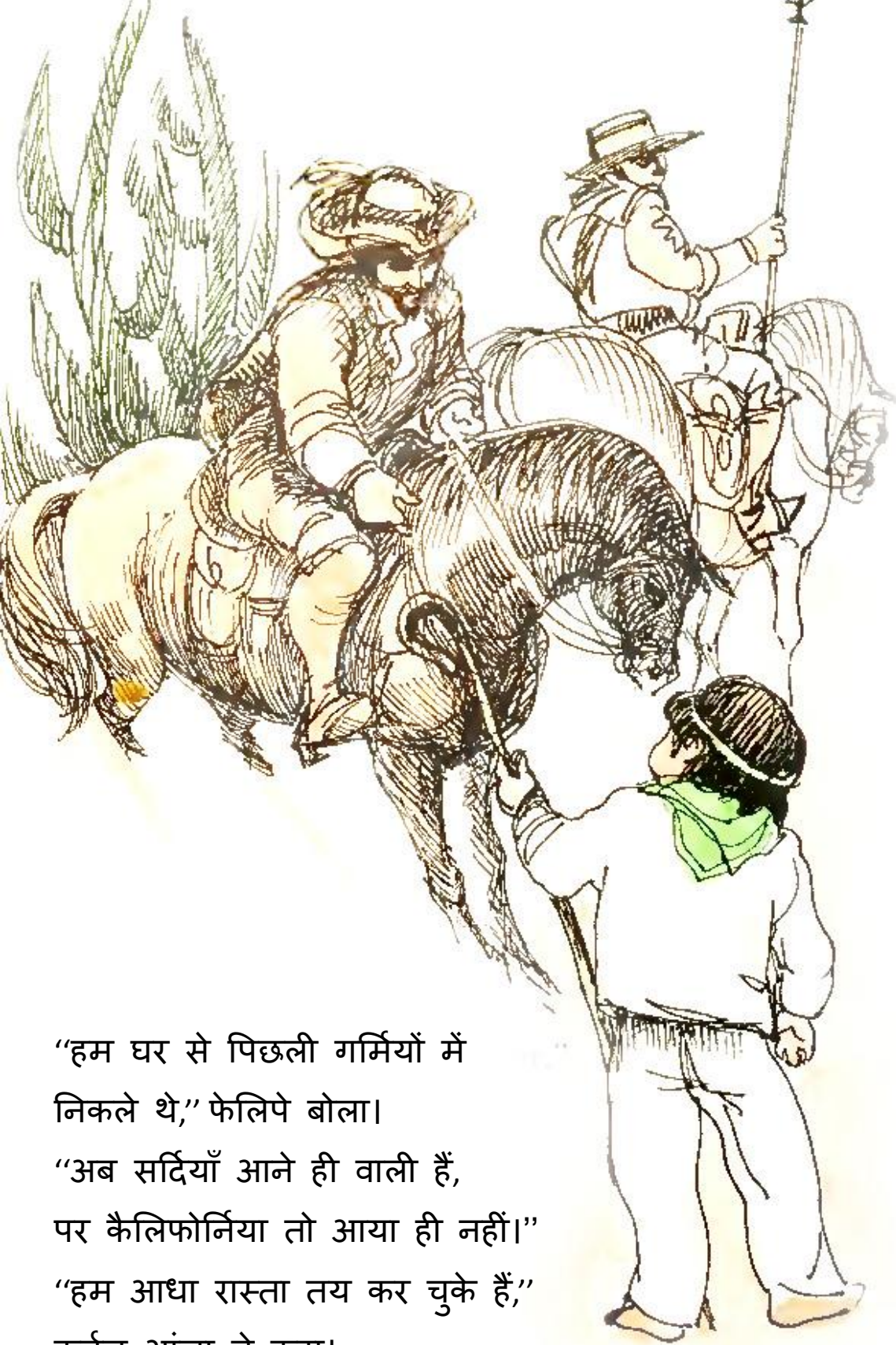
"हम घर से पिछली गर्मियों में
निकले थे," फेलिपे बोला।
"अब सर्दियाँ आने ही वाली हैं,
पर कैलिफोर्निया तो आया ही नहीं।"
"हम आधा रास्ता तय कर चुके हैं,"
कर्नल आंज़ा ने कहा।
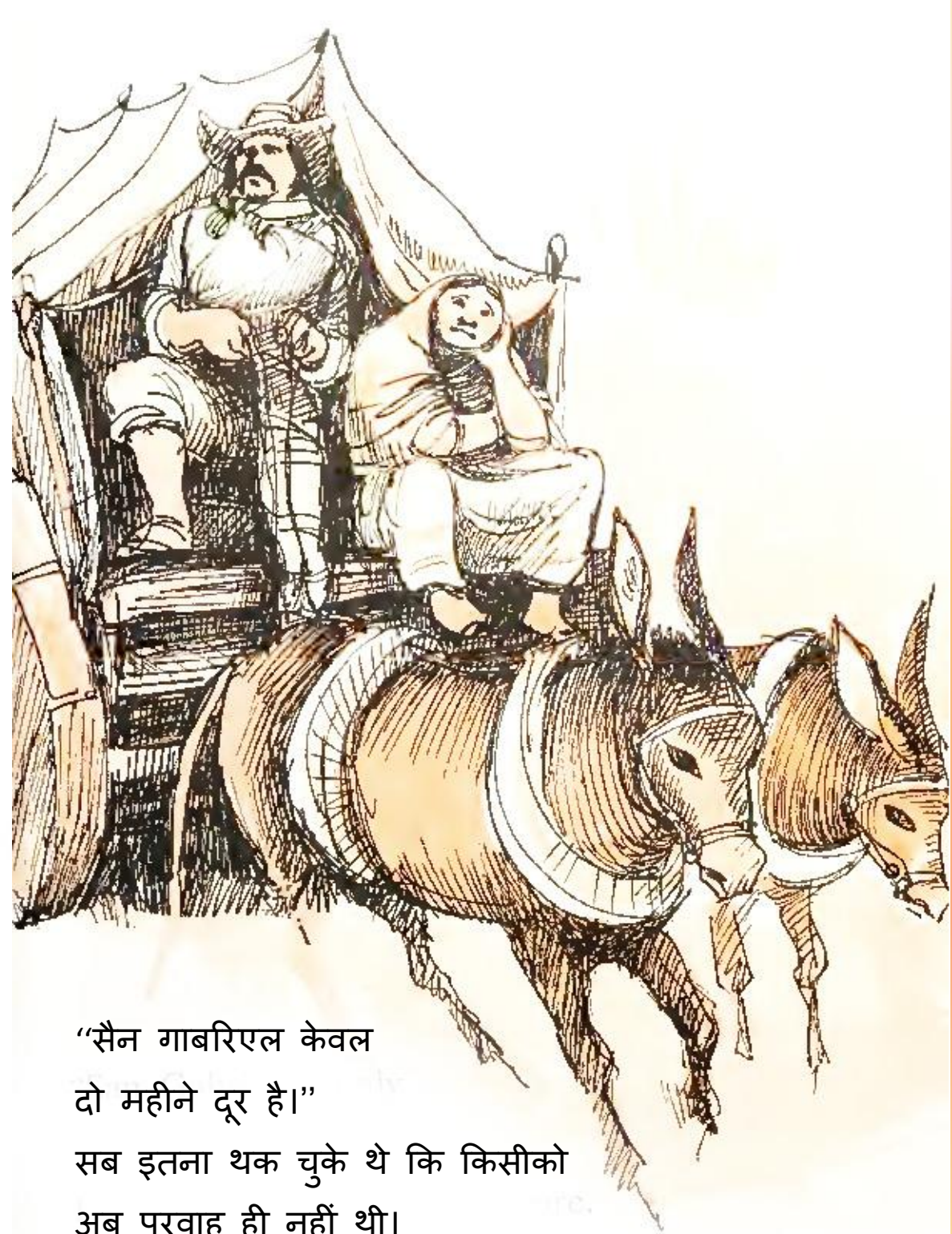
"सैन गाबरिएल केवल
दो महीने दूर है।"
सब इतना थक चुके थे कि किसीको
अब परवाह ही नहीं थी।
"दो महीने, दो साल,
सब एक ही बात है,"
चाची मारिया बुड़बुड़ाईं।
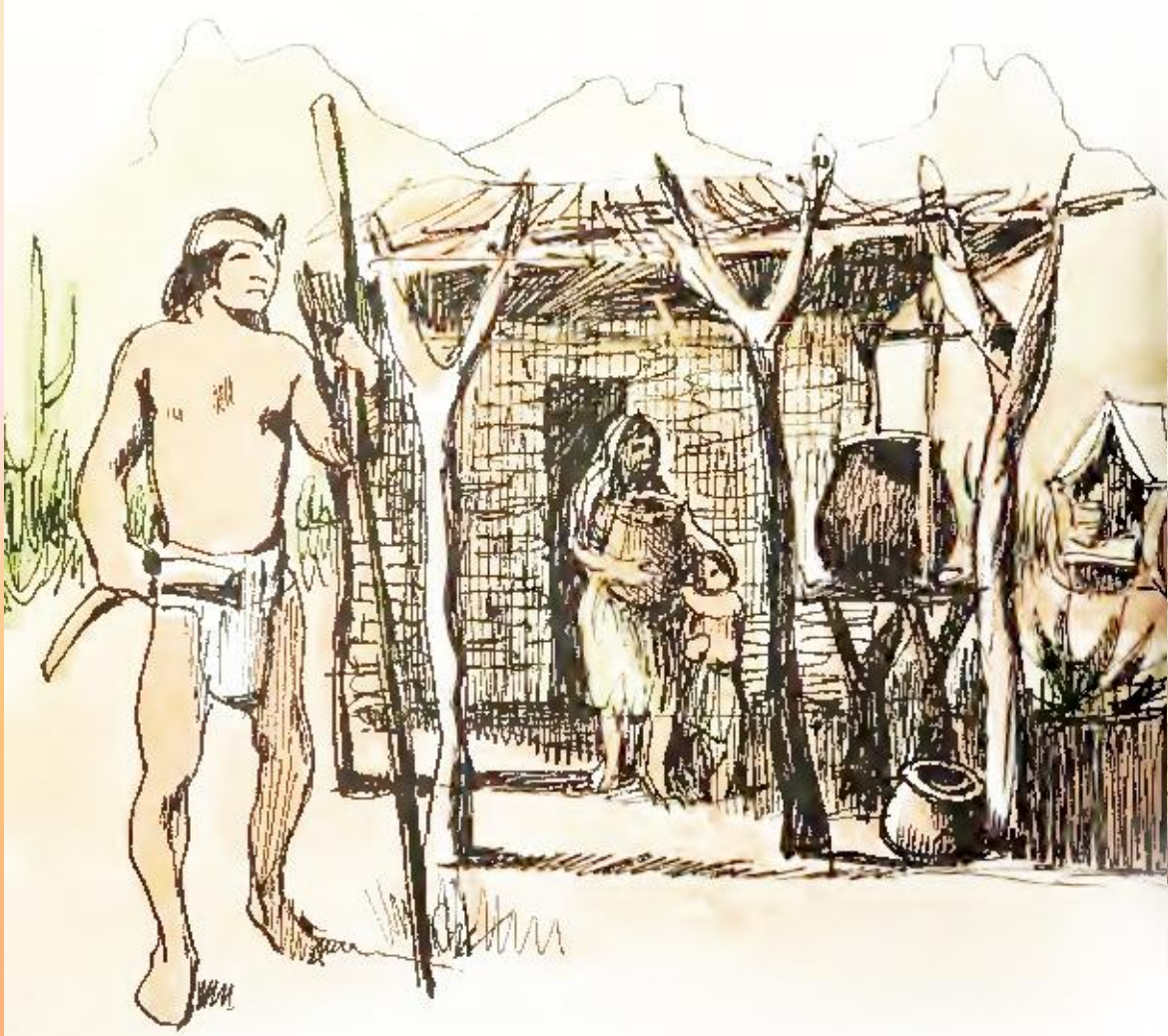
वे एक नदी तक पहुँचे,
उसके किनारे-किनारे इन्डियन बसे हुए थे।
"ये पीमा इन्डियन हैं,
कर्नल आंज़ा ने बताया।
"वे दोस्ताना हैं।"
इन्डियन लोग उनके लिए खाना लाए।
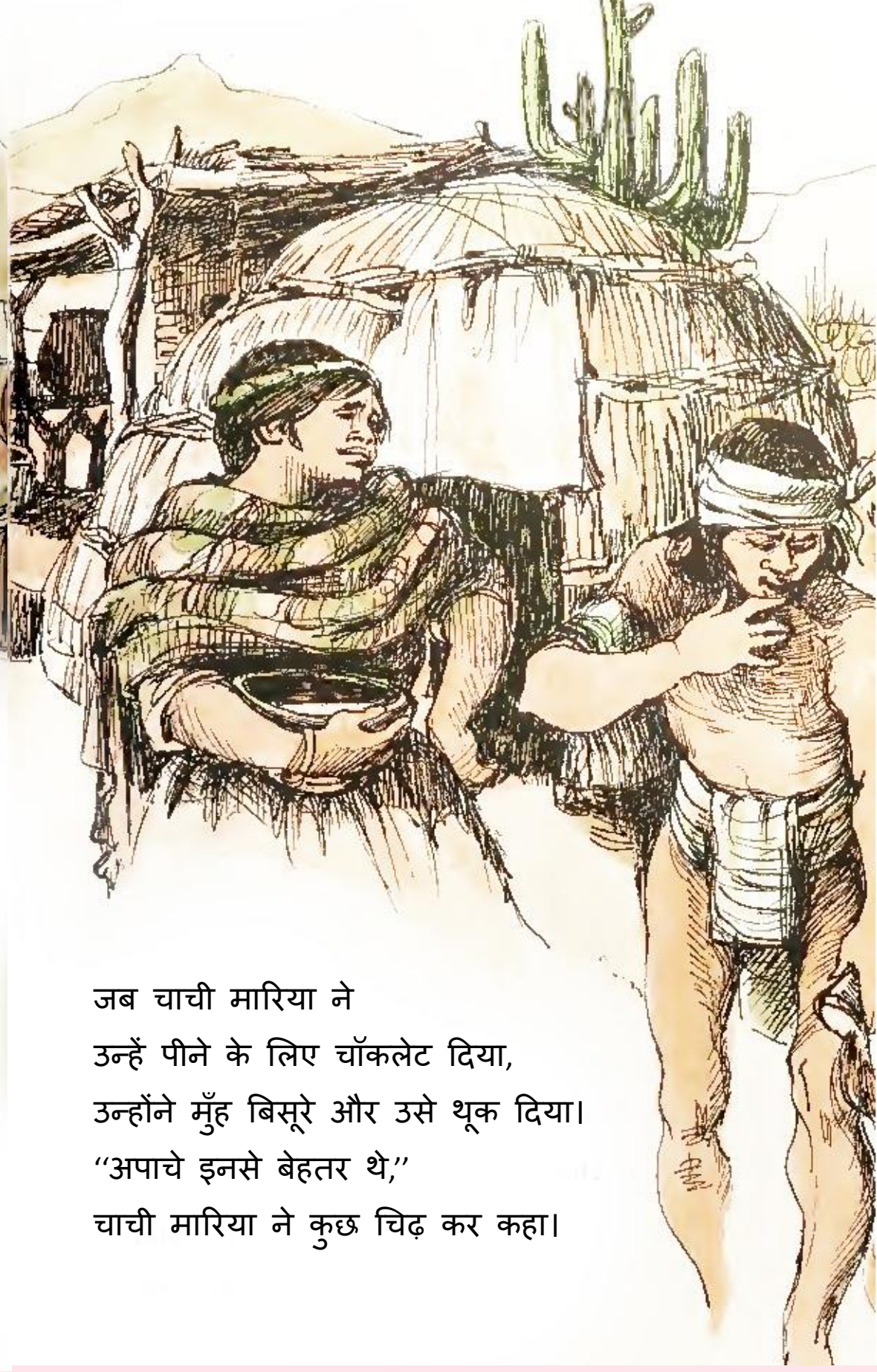
जब चाची मारिया ने
उन्हें पीने के लिए चॉकलेट दिया,
उन्होंने मुँह बिसूरे और उसे थूक दिया।
"अपाचे इनसे बेहतर थे,"
चाची मारिया ने कुछ चिढ़ कर कहा।
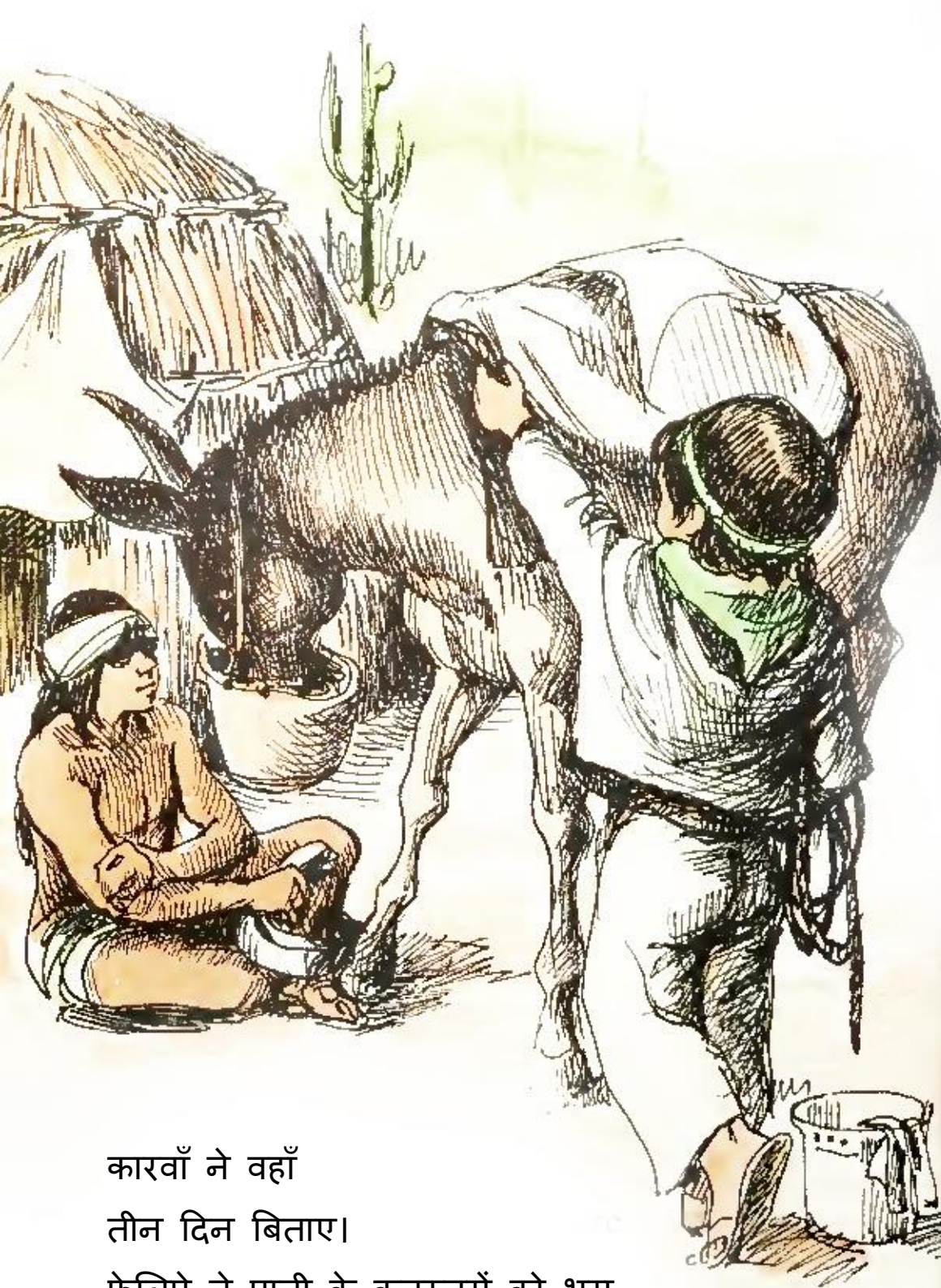
कारवाँ ने वहाँ
तीन दिन बिताए।
फेलिपे ने पानी के कनस्तरों को भरा,
मवेशियों की देखभाल करने में मदद की।

चाचा कार्लोस को बड़ा अचरज हुआ।
''क्या फेलिपे अब काउबॉय (ग्वाला)
बन गया है?''
उन्होंने चाची मारिया से कहा।
''अब आगे और क्या-क्या होगा?''

एक दिन

इन्डियनों ने एक दावत दी।

फेलिपे ने ढ़ेर सारा राजमा और मक्की खाई

तब एक आदमी ने उसे फिलोमीना के लिए

तरबूज काटने में मदद की।

पर फिलोमीना को वह अच्छे ही नहीं लगो।

सो फेलिपे ने उसके हिस्से का तरबूज खा लिया।

4. रेगिस्तान

कारवाँ अब रेगिस्तान में

आगे बढता चला।

ठंडी हवाओं ने रेत और धूल उड़ाई।

अब लगभग कहीं भी पानी नहीं था।

मवेशियों के लिए घास भी नहीं थी।

फिलोमीना को खाने के लिए

बस कुछ खरपतवार ही मिली।

ठंड इतनी थी कि
फेलिपे और फिलोमीना साथ-साथ सोते,
तकि कुछ गरम रह सकें।
बाकी मवेशी पूरी रात
खड़े रहते, भूखे और ठिठुरते,
हवा की ओर पीठ किए।

एक सुबह
फेलिपे को नौ खच्चर मरे हुए मिले।
कर्नल आंज़ा ने उदासी से भर कहा,
''न चारा, न पानी।
यह करिश्मा ही है
कि कुछ पशु अब भी बचे हुए हैं।''

“अगर मवेशी भूख और
प्यास से मर रहे हैं,”
चाचा कार्लोस ने कहा,
“तो लोग भी मर सकते हैं।”

फेलिपे अपने थके-हारे घोड़े
के पास चल रहा था।
ठंडी हवाएं उसके चेहरे पर थपेड़े मार रही थी।
उसने भूखे-प्यासे मवेशियों को
अचानक गिरते और मरते देखा।

उस रात चचा कार्लोस बोले,
''हमें सूखी नदी में
गड्ढे खोदने चाहिए,
ताकि मवेशियों के लिए पानी तो मिले।''

फेलिपे ने फीलोमीना से कहा,
''मुझे आज रात पुरुषों की मदद करनी है,
पर तुम गरम रहोगी।''
उसने अपने चचेरे भाई-बहनों से पूछा,
''फिलोमीना के साथ कौन सोना चाहता है?''
''मैं!'' सभी ज़ोर से बोले।

फेलिपे पूरी रात जुटा रहा,
पानी के गड्ढे खोदता रहा।
वह मवेशियों को एक-एक कर
पानी का पीने लाया।
वह यह भूल गया कि
वह खुद भी कितना थका हुआ है।
आख़िरकार भोर हुई,
तब तक 96 पशु मर चुके थे।
पर कारवाँ को आगे बढ़ना ही पड़ा।
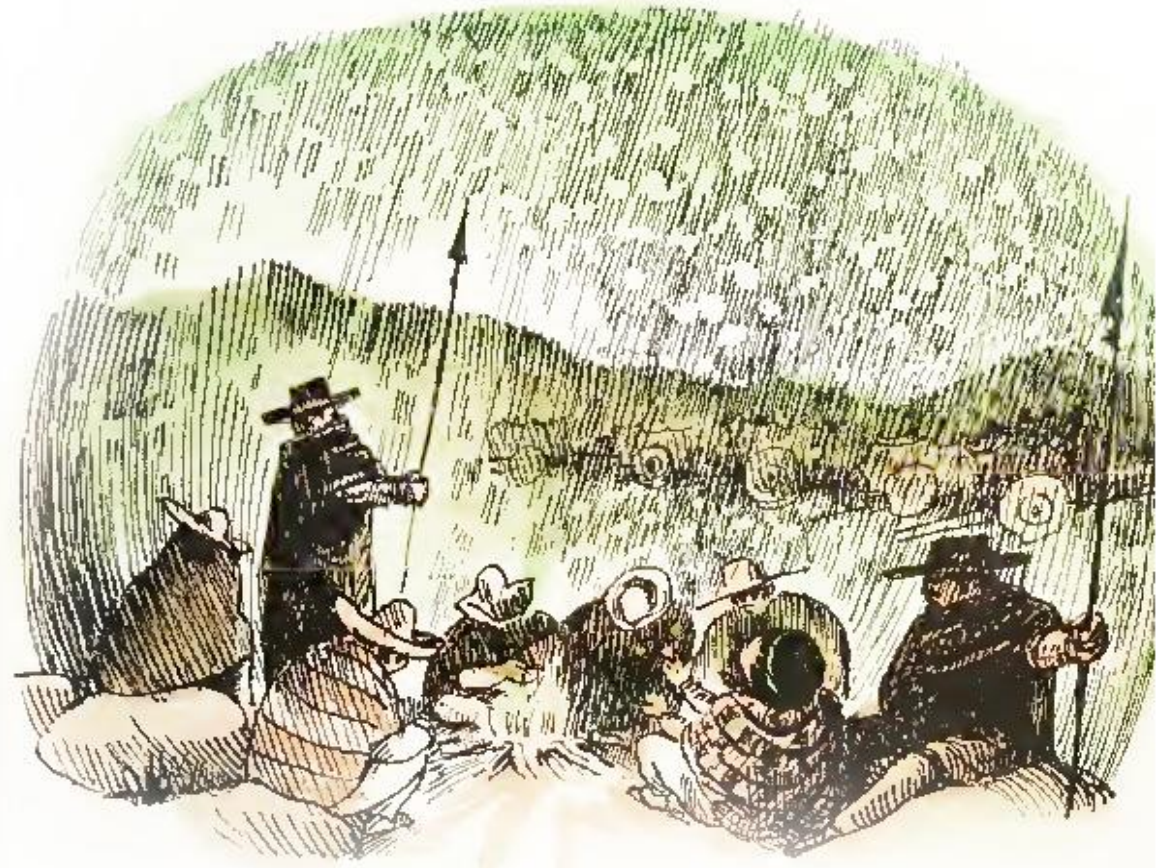
5. मुश्किलें

फेलिपे को कुछ अजीब-सा दिखा।
"यह सफ़ेद-सफ़ेद क्या है?" उसने जानना चाहा।
"बर्फ़," कर्नल आंज़ा ने जवाब दिया।
"तुम मैक्सिको में जहाँ रहते हो,
वहाँ तुमने बर्फ़ देखी ही नहीं है।"
उस रात,
वे लोग, छोटी-छोटी आगों के गिर्द
कम्बल लपेटे बैठे।
पर फिर भी सबको खूब ठंड लगी।
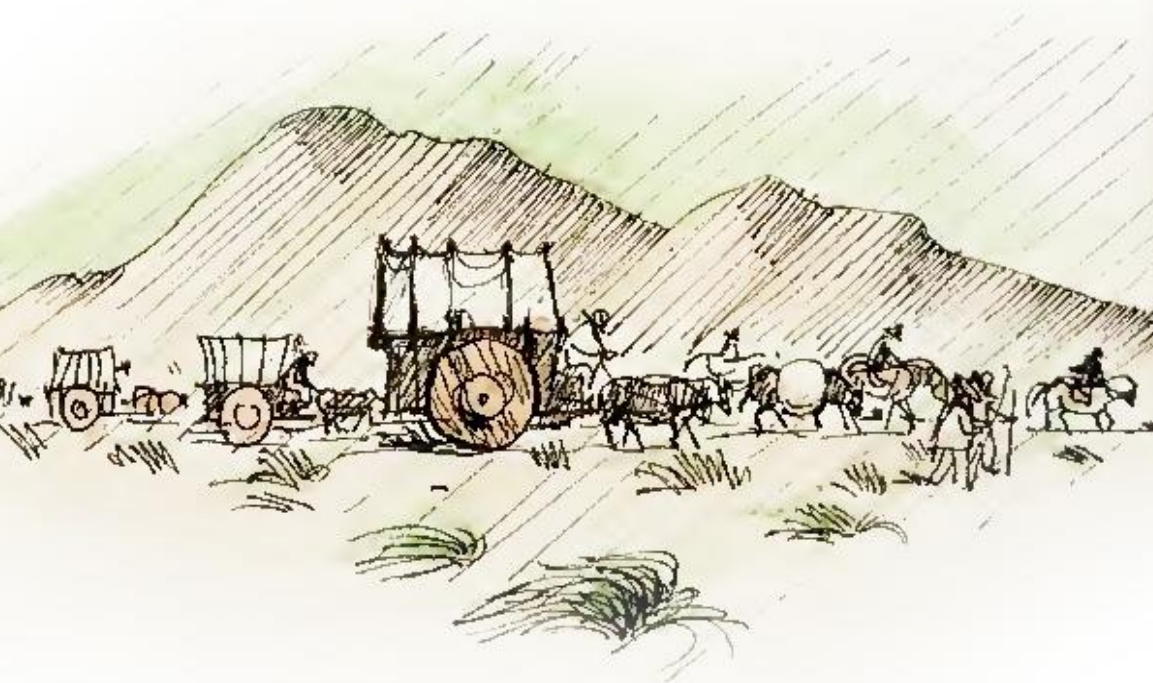
अगली सुबह आसमान साफ़ था।
फेलिपे ने दूर पहाड़ों पर नज़र डाली,
वे बर्फ़ से झक्क सफ़ेद हो चुके थे।
"अरे रे! कैलिफोर्निया में सिवा
बर्फ़ और हिम के सिवा कुछ भी नहीं!"
चाचा कार्लोस चीखे,
"घर में हम ग़रीब ज़रूर थे
पर कम-से-कम गरम तो थे!"
"क्या तुम वापस लौटना चाहते हो?"
चाची मारिया ने आँखें तरेर कर पूछा।

पर फेलिपे को अपने कंधों पर
सूरज का ताप महसूस हो रहा था।
"देखो!" चचेरी बहन रुबेन चीखी,
"बर्फ़ कुछ पिघल रही है!"
ढेंचू - ढेंSSSSS- चूSSSSS!
फिलोमीना ने खुशी जताई।
पहाड़ सामने ही थे।
उसने पानी को पहाड़ी झरनों में
कलकल बहते सूंघ लिया था।
उसे सर्दियों की घास की गंध आई
जो वादियों में उग रही थी।
घोड़ों की रफ्तार भी तेज़ हो गई।
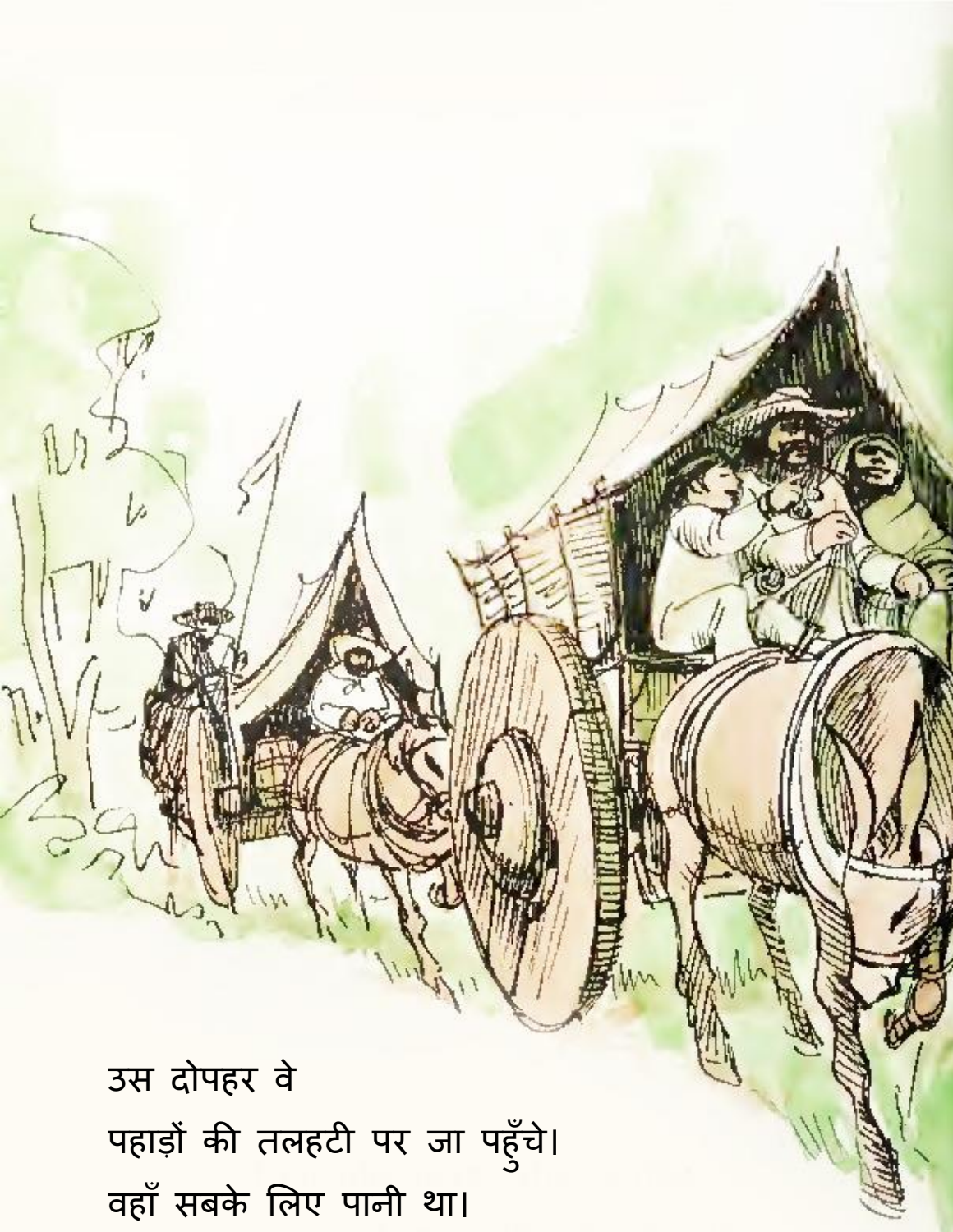
उस दोपहर वे
पहाड़ों की तलहटी पर जा पहुँचे।
वहाँ सबके लिए पानी था।
और मवेशियों के लिए लहलहाती घास।
''हमने आख़िर अपना मकसद हासिल कर ही लिया!''
फेलिपे खुशी से चीखा।
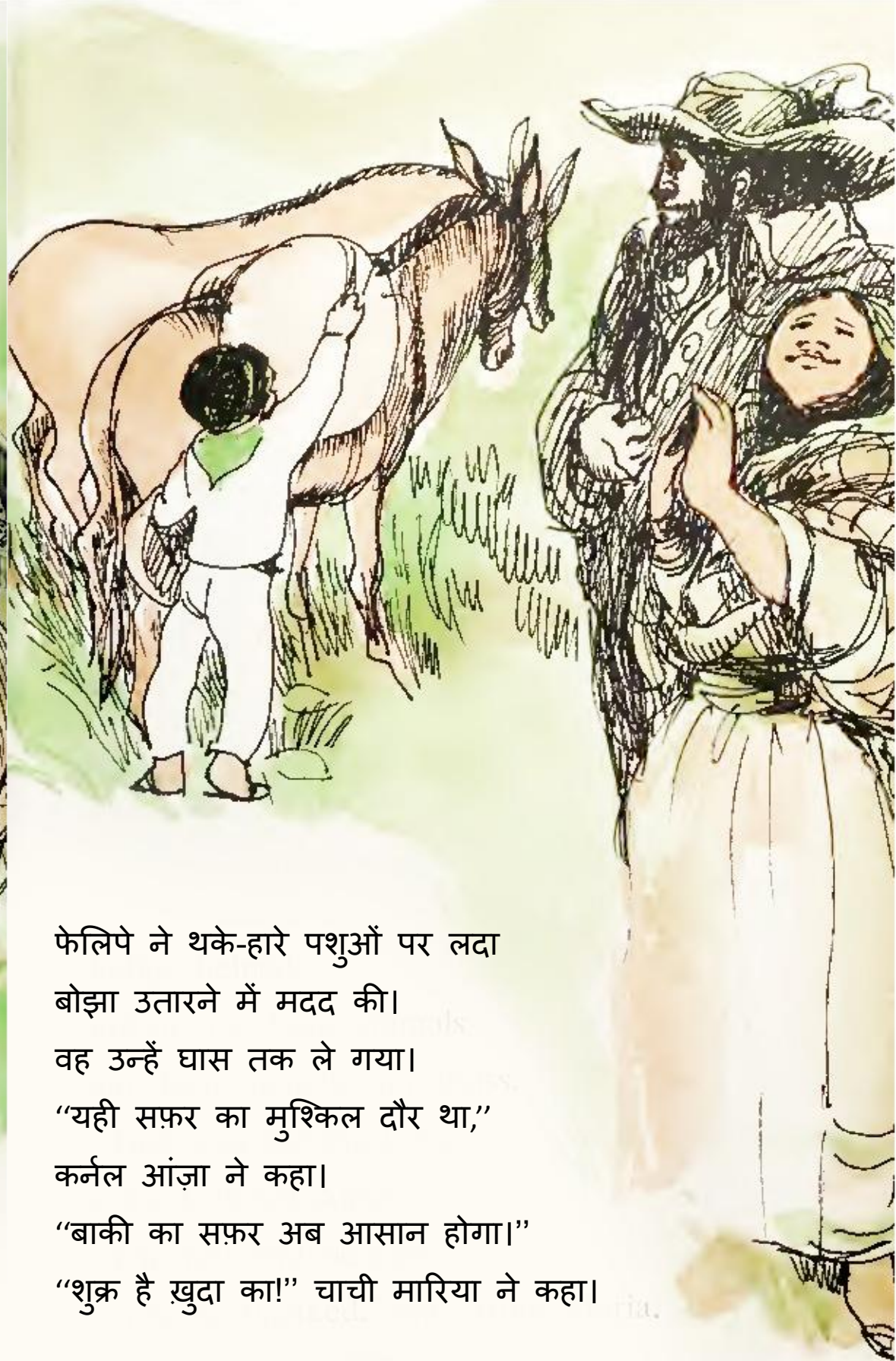
फेलिपे ने थके-हारे पशुओं पर लदा
बोझा उतारने में मदद की।
वह उन्हें घास तक ले गया।
''यही सफ़र का मुश्किल दौर था,''
कर्नल आंज़ा ने कहा।
''बाकी का सफ़र अब आसान होगा।''
''शुक्र है ख़ुदा का!'' चाची मारिया ने कहा।

6. कैलिफोर्निया

उन्होंने सप्ताह भर वहीं आराम किया।
तब पहाड़ों पर चढ़ना शुरु किया।
हर ओर ऊँचे पेड़ और हरी घास थी।
फेलिपे को सूरजमुखी
और जंगली अंगूर मिले।
नदी के पानी पर सूरज
पूरी तेज़ी से चमक रहा था।
नदी में भरपूर मछलियाँ थीं।

''पर कैलिफोर्निया भला कहाँ है?''
फिलिपे ने पूछा।
''यही तो कैलिफोर्निया है,''
कर्नल आंज़ा ने बताया।
''हम लगभग
सैन गाबरिएल पहुँच गए हैं।''

‘‘फिलोमीना को देखो तो ज़रा,’’ रुबेन बोली।
‘‘वह बड़ी हो गई है।’’
उसके कंधे अब
फेलिपे जितने लम्बे हो चुके हैं,’’
चाची मारिया ने कहा।

ढेंचू - ढेंSSSSS- चूSSSSS!
फिलोमीना ने फ़क्र से गाया।
उसने फेलिपे को अपनी पीठ पर बैठा
सवारी करने दी।
उसकी माँसपेशियाँ मज़बूत थीं।
वह छोटे गोल चक्करों में दौड़,
शान बघारने लगी।

"यह तो हमारे काऊबॉय की घोड़ी ही है!"
चचा कर्लोस ने कहा।
जब हम अपना नया घर बनाएंगे,
वह लट्ठे खींचेगी," रुबेन बोली।
"और हल भी!" चाचा कार्लोस बोले।
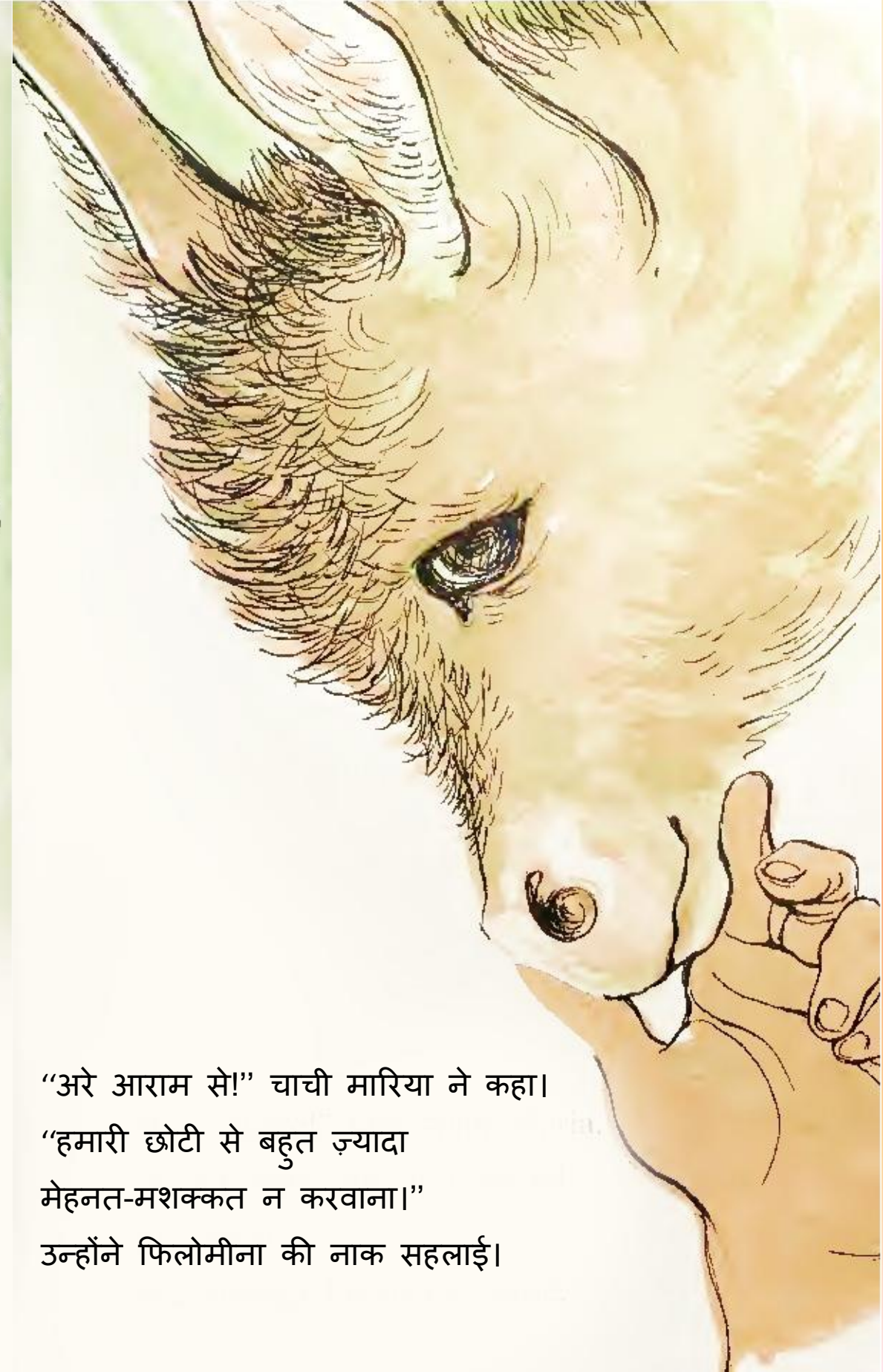
"अरे आराम से!" चाची मारिया ने कहा।
"हमारी छोटी से बहुत ज़्यादा
मेहनत-मशक्कत न करवाना।"
उन्होंने फिलोमीना की नाक सहलाई।
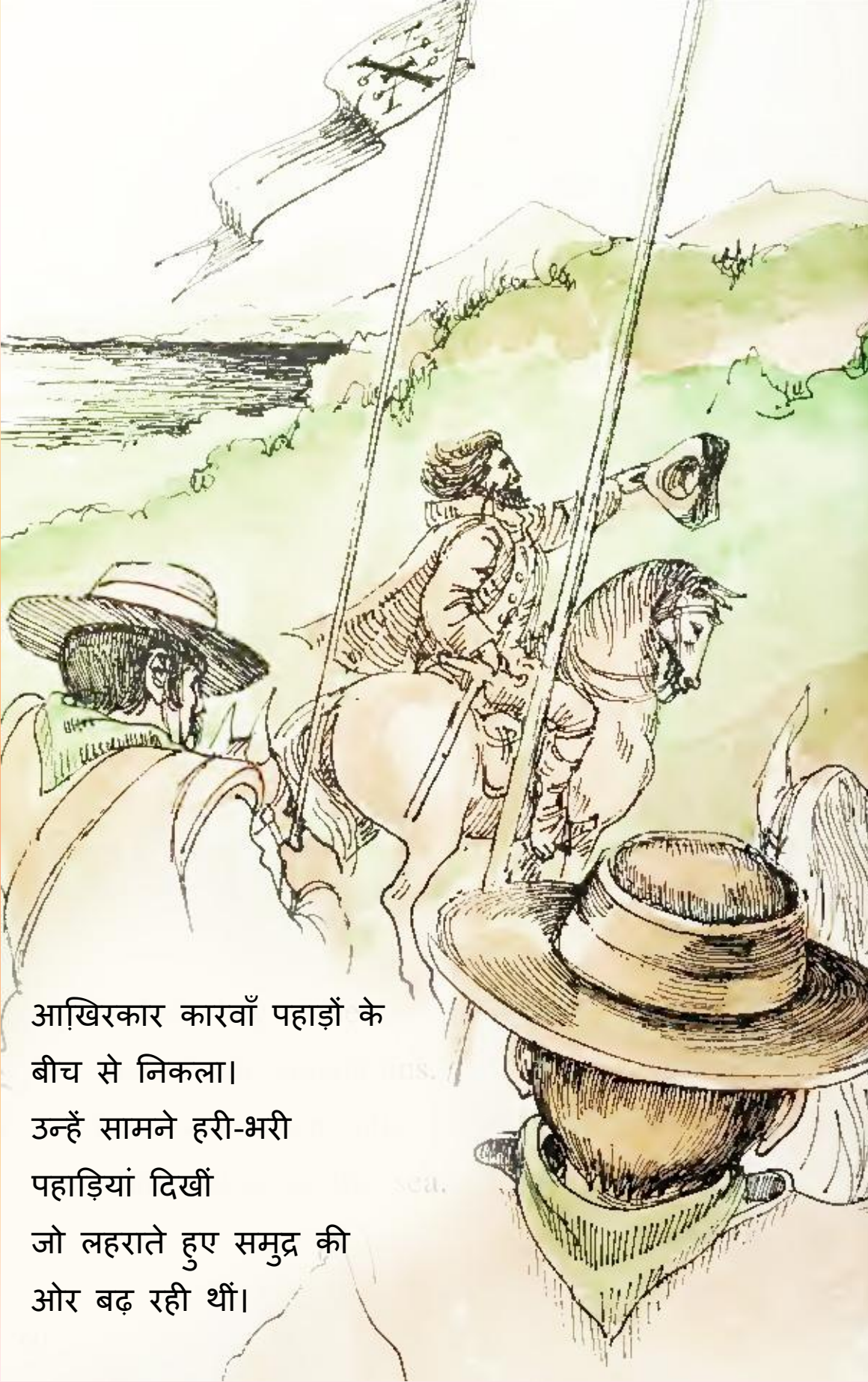
आख़िरकार कारवाँ पहाड़ों के
बीच से निकला।
उन्हें सामने हरी-भरी
पहाड़ियां दिखीं
जो लहराते हुए समुद्र की
ओर बढ़ रही थीं।

सैन गाब्रिएल मिशन
के पादरी उनसे मिलने आए।

''हम अंत-तंत घर आ ही पहुँचे,''
फेलिपे ने फुसफुसा कर फिलोमीना से का।
और फिलसेमीना ने गाया,
''ढेंचू - ढेंSSSSS- चूSSSSS!''

लेखिका की कलम से

कर्नल हुआन बाउतिस्ता का अभियान स्पैनिश मैक्सिको से कैलिफोर्निया इसलिए भेजा गया था ताकि वहाँ तक पहुँचने का भू-मार्ग खुले और आल्टा कैलिफार्निया कहलाने वाला विशाल खाली इलाका, जो आज अमरीका का कैलिफोर्निया राज्य है, उसे आबाद किया जा सके।

वहाँ जाकर बसने वाले लोग, इस कहानी के किरदारों की ही तरह कुलिआखान, मैक्सिको से अप्रेल 1775 में निकले थे और 4 जनवारी 1776 में सैन गाब्रिएल पहुँचे थे। 12 परिवार सैन गाब्रिएल में बस गए, और बाकी सैन फ्रान्सिस्को बे गए और 17 सितम्बर 1776 में उन्होंने सैन फ्रैन्सिस्को प्रेसीडिओ की स्थापना की।

बाद में कर्नल आंज़ा मैक्सिको वापस लौटे गए। पर ये परिवार कैलिफोर्निया में ही रहते रहे। उनके वंशज आज भी वहीं रहते हैं।

जेनिविव ग्रे का जन्म जोन्सबर्ग, आर्केनसॉ में हुआ था। उन्होंने एरिज़ोना विश्वविद्यालय से मास्टर्स की डिग्री पाई। शिक्षिका के रूप में काम करते हुए उन्होंने कई बाल पुस्तकें और कक्षाओं में इस्तेमाल की जा सकने वाली शिक्षा सामग्री भी रची। मिज़ ग्रे के दो वयस्क बेटे और दो पोते - मैथ्यू और रायन - हैं। वे वर्तमान में टस्कन, एरिज़ोना में रहती हैं।

एन ग्रिफैल्कोनी का जन्म न्यू यॉर्क शहर में हुआ। उन्हेंने अनेक बाल पुस्तकों के लिए चित्र आंकें हैं, जिनमें उनकी अपनी रचना *ट्रॉय ट्रम्पेट* भी शामिल है। शिक्षिका, लेखिका और चित्रकार मिज़ ग्रिफैल्कोनी ने कई साल मैक्सिन इन्डिन लोगों के इतिहास की शोध करते, और मैक्सिको की यात्रा करते बिताएं हैं। वे अब न्यू यॉर्क में रहती और काम करती हैं।